AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 07 | Issue 07 | July 2026 | *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 15-23

पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्रों का समींक्षात्मक अध्ययन : एक समकालीन परिप्रेक्ष्य

लुकेश कुमार मिरचे [1], डॉ. साहित्यांजली चंद्रा [2], प्रमोद कुमार रे [3]

[1,2] सहायक प्राध्यापक, मॅट्स युनिव्हर्सिटी, रायपूर, छत्तीसगड
[3] एल. आय. एस. प्रोफेशनल , रायपूर, छत्तीसगड

~~~~~~

सरांश :

आज का समय परिवर्तन का समय का है, समय जैसे–जैसे आगे बढ़ता जाता है वैसे–वैसे नए–नए चीजों का आविष्कार और सद्धांतो का उदय होता है। आज भारतीय पुस्तकालयों में क्रांतिकरी परिवर्तन हुए है, और इस परिवर्तन का मुख्य कारण पुस्तकालय विज्ञान के पांच नियम है, जिसको भारतीय पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने दिया है। यह सिद्धांत शुरू से ही बहुत प्रभावशाली रहा है और अनेक विद्वानों ने समय और मांग के हिसाब से इसमें परिवर्तन किये है, इस शोध में पुस्तकालय विज्ञान के पांच नियमों का समींक्षात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन विधि के रूप में गुणात्मक और द्वितीयक सूचना स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्रों का पुस्तकालयों में कितना प्रभाव पड़ा है, इसका अध्ययन किया गया है। क्योंकि आज के आधुनिक परिवेश में इन नियमों के साथ पुस्तकालयों का समन्वय आवश्यक है।

परिचय :

भारतीय पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के जनक डॉ. शियाली राममृता रंगनाथन, जिन्हें एस. आर. रंगनाथन के नाम से सर्म्पूण वि व जानता है, जो एक भारतीय गणितज्ञ थे और बाद में पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप मे कार्य किया। डॉ. शियाली रामामृत रंगनाथन (S.R. Ranganathan) भारतीय पुस्तकालय के आधार स्तंभ है, जिन्होंने इस विषय को व्यापक वैज्ञानिक दृश्टि कोण प्रदान किया ,तथा एक सामाजिक दर्शन के रूप में भी विकसित किया है। वर्ष 1924 में जब डॉ. रंगनाथन ने मद्रास विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला और उसके बाद लंदन विश्वविद्यालय में बेर्विक सेयर्स (Berwick Sayers) के तत्वधान में पुस्तकालय विज्ञान का अध्ययन कार्य पूरा किया, तब अहसास किया कि इस क्षेत्र में मौलिक सिद्धांतों की कमी

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Lukesh Kumar Mirche Assistant Professor, MATS University, Raipur, Chhattisgarh Email: lukeshmiri1681@gmail.com	
~~~~~~

है। इसी अनुभव के परिणामस्वरूप, उन्होंने 1928 में अन्नामलाई विश्वविद्यालय, चिदंबरम (तमिलनाडु) के एक सम्मेलन में पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्रों को सामने लाया, जो बाद में 1931 में उनकी महत्वपूर्ण लेख 'द फाइव लॉज ऑफ लाइब्रेरी साइंस' के नाम सें दुनिया के समक्ष रखा गया।

वर्तमान शोध रिपोर्ट इन पांच सूत्रों का विस्तृत और समींक्षात्मक मूल्यांकन प्रदान करती है, तथा आधुनिक दृ ष्टिकोण और नवाचारपूर्ण विचारधारा प्रदान करती है। वर्तमान समय सिर्फ भौतिक या मुद्रित पुस्तकें का नहीं रहा, आज के इस तकनीकी युग में केवल पारंपरिक पुस्तकालय व्यवस्था पर्याप्त नहीं रह गई है। वर्तमान समय में डिजिटल वातावरण, ई–संसाधन, ऑनलाइन सूचना सेवाएँ तथा इंटरनेट आधारित ज्ञान प्रणाली से जुड़ना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस बदलते सूचना परिवेंश को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन किया गया है कि डॉ. रंगनाथन के पाँच सिद्धांत किस प्रकार आधुनिक डिजिटल युग, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) तथा डिजिटल लाइब्रेरी प्रणाली के साथ सामंजस्य स्थापित कर रहे हैं। साथ ही, वर्तमान समय में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता, उपयोगिता एवं महत्त्व का समींक्षात्मक अध्ययन भी किया गया है। यह शोध का मुख्य केंद्र बिंदु पुस्तकाल विज्ञान के पांच सूत्रों का नई दि ाा में विस्तृत एवं गहन अध्ययन करना है।

शब्द कुंजी :– आधुनिक पुस्तकालय, डिजिटल युग, पुस्तकायल विज्ञान के पांच सूत्र,, सूचना।

उद्देश्य :

इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. इस अध्ययन का उद्देश्य किसी एक पुस्तकालय (सार्वजनिक, अकादमिक, और विशेष पुस्तकालयों) से न होकर, सभी प्रकार के पुस्तकालयों के परिपेक्ष्य में पुस्तकायल विज्ञान के पांच सूत्रों का नई दिशा में अध्ययन करना है।

2. पुस्तकालय विज्ञान के पांच नियमो का आधुनिक परिवेश में प्रभाव का अध्ययन करना ।

3. सभी पुस्तकालयों को ध्यान में रखते हुए पांच नियमो का विस्तृत प्रस्तुतिकरण करना।

शोध समस्या :

बढ़ते आधुनिकीकरण ने दुनिया को बहुत तेजी के साथ बदला है, और समय के साथ – साथ पुस्तकायल के विकास में तेजी आयी है, इस क्रांतिकारी बदलाव के परिणाम स्वरुप पुस्तकालय के पारम्परिक सिद्धांत और आधुनिक आव यकताओं के बीच समन्वय बिठाने में तनाव की स्थिति उत्पन्न हुआ है, भारत में सभी प्रकार के पुस्तकालयों का विकास हुआ है, तथा आज के आधुनिक युग में निरंतर जारी है, लेकिन इस आधुनिकीकरण के चलते बहुत सारी चुनौतियां और समस्या सामने आयी है, जैसे :– पुस्तकालय उपयोगकर्ताओ के चरित्रों में परिवर्तन आया है, भौतिक पुस्तकायल और आधुनिक पुस्तकालय के परिवेश को समझना चुनौती बन गया है, इन सब चुनौतियों को दूर करने के लिए रंगनाथन के पांच नियमो का मूल्यांकन और उपयोगिता को बताने को आवश्यकता है। यह अध्ययन इसमें मौजूद कमी को दूर करने का पूरा प्रयास करता है, तथा रंगनाथन के पाँच नियमों की समकालीन सार्वजनीक, अकादमिक औंर विषेश पुस्तकालयों के संदर्भ में किस प्रकार प्रभावि रूप से वर्णन और उपयोंग किया जा सकता है, औंर इसी प्रकार, तेजी से बदलते सूचना परिदृश्य में अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सकते हैं।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन डॉ. शियाली रामामृत रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित 'पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सिद्धांतों' की इक्कीसवीं सदी के डिजिटल परिदृश्य में सार्थकता का एक गहन और विवरणात्मक अन्वेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन की आधारशिला गुणात्मक अनुसंधान प्रविधि और द्वितीयक सूचना स्रोतों के समीक्षात्मक विश्लेषण पर टिकी है। शोध का मुख्य केंद्रबिंदु यह समझना है कि सूचना युग की नवीनतम पीढ़ी, जिसे 'जेनरेशन जेड' के रूप में अभिहित किया जाता है, उनके सूचना संबंधी व्यवहार और आधुनिक सार्वजनीक, शैक्षणिक औंर वि ेश पुस्तकालयों की सेवाओं के मध्य किस प्रकार का अंतर्संबंध विद्यमान है। यह अनुसंधान यह प्रतिपादित करने का प्रयास करता है कि रंगनाथन के सिध्दांत केवल मुद्रित ग्रंथों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ई–संसाधनों, डेटाबेस और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भी एक ध्रुवतारे की भाँति मार्गदर्शक हैं।

साहित्य समीक्षा :

Daniel Martínez-Avilaa and Patrícia de Almeida.(2024). इस शोध में बताया गया है की 'पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियम' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि ज्ञान–संगठन औंर प्रबंधन की एक क्रांतिकारी अवधारणा है, जिसने पुस्तकालय और सूचना विज्ञान को दार्शनिक आधार प्रदान करता है। शियाली राममृता रंगनाथन द्वारा प्रस्तुत यह लेंख उनके व्यापक सोंच और बौद्धिक प्रयासों का निश्कर्श था, जिसने आगे चलकर कोलन क्लासिफिकेशन, क्लासिफाइड कैटलॉग कोड और लाइब्रेरी एडमिनिस्ट्रेशन जैसे महत्वपूर्ण आविश्कार औंर कार्यों को नई दिशा दिया है। यह ग्रंथ आज भी सबसे अधिक उद्धृत कृतियों में शामिल है और विश्वभर के पुस्तकालय शिक्षण संस्थानों में पढ़ाया जाता है, जो इसकी स्थायी प्रासंगिकता को दर्शाता है। ग्रंथसूची–मेंट्रिक और ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोणों से यह सामने आता है कि ये नियम या सिध्दांत केवल पारंपरिक पुस्तकालयों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि डिजिटल सूचना युग में भी मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार, "एक नई सोच" रंगनाथन के सिद्धांतों को समकालीन संदर्भ में पुनः स्थापित करते हुए उनके वैश्विक प्रभाव और निरंतर प्रासंगिकता को रेखांकित कर रहा है।

Dhiman, Anil Kumar, (2023). डॉ. रंगनाथन के ये पांच सूत्र केवल पुस्तकालय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये सूचना विज्ञान के सार्वभौमिक सत्य बन चुके हैं। शब्दावली भले ही पुस्तकों से बदलकर डेटा या कंटेंट हो गई हो, लेकिन इनका मूल उद्देश्य आज भी वही है: ज्ञान का प्रभावी और न्यायसंगत वितरण करना। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इस युग में, इन नियमों के मूल स्वरूप को अक्षुण्ण रखते हुए इनका आधुनिक संदर्भों में अनुकूलन किया गया है।

Dharmishtha Maheshbhai Dangara and Prayatkar Kanadiya, (2025). डॉ. एस.आर. रंगनाथन के पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियम आज डिजिटल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में और भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि कैसे पारंपरिक पुस्तकालय दर्शन और आधुनिक तकनीक का मिलन एक आधुनिक पुस्तकालय का आधार है। यह विश्लेषण दर्शाता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि रंगनाथन के पहुँच, समावेशिता और दक्षता के मूल्यों को सुदृढ़ करने वाला माध्यम है। यह शोध शास्त्रीय दर्शन और आधुनिक नवाचार के बीच एक सेतु का निर्माण करता है, जो नैतिक और उपयोगकर्ता–केंद्रित पुस्तकालय सेवाओं के लिए एक स्थायी ढाँचा प्रदान करता है।

Gilbert Paul Igboechesi, (2025). S. R. Ranganathan ने पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियम ऐसे समय में दिए जब 20वीं सदी की शुरुआत में पुस्तकालय तेजी से बदल रहे थे। उस समय नई तकनीकों के आने से लोगों की जरूरतें भी बदल रही थीं, जिससे पुस्तकालयों और पुस्तकालयाध्यक्षों के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी हो गईं। इन सबको ध्यान में रखते हुए रंगनाथन ने 1928 में ये नियम बनाए और 1931 में अपनी किताब पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियम में प्रकाशित किए। ये पाँच नियम बहुत सरल और उपयोगी हैं— पुस्तकें उपयोग के लिए हैं, हर व्यक्ति के लिए उसकी पुस्तक है, हर पुस्तक के लिए उसका पाठक है, पाठक का समय बचाना चाहिए, और पुस्तकालय हमेशा वर्धन ीील संस्था होती है। इनका मुख्य उद्देश्य लोगों में पढ़ाई को बढ़ावा देना और निरक्षरता को कम करना था। आज के समय में भी ये नियम उतने ही महत्वपूर्ण हैं, भले ही अब डिजिटल लाइब्रेरी और नई तकनीक आ गई हैं, लेकिन ये नियम अभी भी पुस्तकालय सेवाओं को आसान, उपयोगी और सरल बनाने में मदद करता हैं।

आधुनिक पुस्तकालयों के संदर्भ में पाँच नियम का मूल्यांकन

प्रथम सूत्रः पुस्तकें उपयोग के लिए है

डॉ. रंगनाथन का प्रथम सूत्र "पुस्तकें उपयोग के लिए हैं" एक तुच्छ छोंटा लगता है, लेंकिन पुस्तकालय विज्ञान कें क्षेंत्र में एक क्रांतिकारी विचार था, क्योंकि पहले पुस्तकालयों का मुख्य उद्देश्य केवल पुस्तको का संग्रह और संरक्षण होता था, न कि उनका उपयोग करना, मध्यकाल में तो पुस्तकों को जंजीरों से बाँधकर रखा जाता था ताकि वे सुरक्षित रहें, लेकिन रंगनाथन ने स्पष्ट किया कि पुस्तकों का वास्तविक महत्व तभी है जब वे पाठकों तक पहुँचें और उपयोग में आए। इस सिद्धांत का प्रभाव पुस्तकालय प्रबंधन के सभी पहलुओं पर पड़ता हैः– पुस्तकालय का स्थान ऐसा होना चाहिए जहाँ उपयोगकर्ता आसानी से पहुँच सकें, पुस्तकालयों का समय पाठकों की सुविधा के अनुसार हो, वातावरण आरामदायक, हवादार और प्रकाशयुक्त हो तथा कर्मचारियों का व्यवहार सहयोगी और सेवाभावी हो, ताकि पाठकों को उचित मार्गदर्शन मिल सके। आधुनिक डिजिटल युग में इस सूत्र का अर्थ और व्यापक हो गया है, जहाँ पुस्तको की जगह सभी प्रकार के सूचना संसाधन शामिल हो गए हैं और डिजिटल एक्सेस, ई–लाइब्रेरी तथा ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से उपयोगकर्ता कहीं से भी जानकारी प्राप्त कर सकते है, हालांकि यदि ये संसाधन पेवॉल या जटिल इंटरफेस के कारण सुलभ नहीं हैं, तो यह इस सिद्धांत के विरुद्ध है, इसलिए ओपन एक्सेस और सरल उपयोगिता आज इस सूत्र के आवश्यक अंग बन गए है।

द्वितीय सूत्रः प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिलें

डॉ. रंगनाथन का दूसरा सूत्र "प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिलें" पुस्तकालय विज्ञान के लोकतंत्रीकरण का आधार है, जो पुस्तकें सबके लिए है, के सिद्धांत को स्थापित करता है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी जाति, लिंग, आयु, धर्म या सामाजिक स्थिति का हो उसे अपनी आवश्यकता और रुचि के अनुसार जानकारी प्राप्त करने का समान अधिकार है। यह सूत्र केवल सामान्य पाठकों तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों, दृष्टिहीनों, दिव्यांगों, नव–साक्षरों और श्रमिक वर्ग जैसेः– विशेष समूहों के अधिकारों को भी सुनिश्चित करता है। इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राज्य का कर्तव्य है कि वह पुस्तकालय कानून बनाए और पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान करे, जबकि पुस्तकालय प्राधिकरण को ऐसी पुस्तक चयन नीति अपनानी चाहिए जो समाज की विविध आवश्यकताओं को दर्शाए। साथ ही, कर्मचारियों को

Vol-7, Issue-07, July 2026 ISSN (E): 2583-1348
AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social science

उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को समझकर सहायता करनी चाहिए और पाठकों को भी नियमों का पालन करते हुए दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। आधुनिक डिजिटल युग में यह सिद्धांत प्रत्येक उपयोगकर्ता को उसकी जानकारी के रूप में विकसित हो गया है, जहाँ एआई आधारित सिफारिश प्रणालियाँ और सहायक तकनीकें व्यक्तिगत और सुलभ सेवाएँ प्रदान करती हैं। हालांकि, एल्गोरिथ्मिक पक्षपात का खतरा बना रहता है, इसलिए निष्पक्षता बनाए रखने के लिए मानव निगरानी आवश्यक है।

तृतीय सूत्र: प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिलें

डॉ. रंगनाथन का तृतीय सूत्र प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिलें पुस्तकालय सेवाओं के पूरक पक्ष को दर्शाता है, जहाँ ध्यान इस बात पर होता है, कि पुस्तकालय में उपलब्ध हर संसाधन अपने उपयुक्त पाठक तक पहुँचे। उनका मानना था कि जो पुस्तक बिना उपयोग के पुस्तकालय शेल्फ में रखी रहती है, जिसे संसाधनों का सदुपयोग नही होता है। इस सिद्धांत को लागू करने के लिए खुली पहुँच प्रणाली महत्वपूर्ण है, जिससे पाठक स्वयं पुस्तकों के बीच जाकर नई और उपयोगी सामग्री खोज सकें। इसके साथ ही वर्गीकरण, सूचीकरण, पुस्तक प्रदर्शन और पुस्तकालय प्रचार–प्रसार जैसे उपाय भी आवश्यक हैं, ताकि अधिक से अधिक पाठकों तक संसाधनों की जानकारी पहुँच सकें। डिजिटल युग में यह अवधारणा खोंजने की क्षमता के रूप में विकसित हुई है, जहाँ प्रत्येक डिजिटल संसाधन को उचित मेटाडेंटा और इंडेक्सिंग की आवश्यकता होती है, ताकि वे सर्च इंजन में आसानी से मिल सके, एआई और मशीन लर्निंग आधारित प्रासंगिक खोंज उपयोगकर्ता की जरूरत को समझकर प्रासंगिक सामग्री खोजने में मदद करते हैं, वहीं डेंटा एनालिटिक्स संग्रह के कम उपयोग वाले भागों की पहचान कर उन्हें पाठकों तक पहुँचाने में सहायक होते हैं, इसलिए पुस्तकालयों का दायित्व है कि वे विविध और संतुलित जानकारी तक पहुँच सुनिश्चित करें।

चतुर्थ सूत्र: प्रत्येंक पाठकों का समय बचाएं

डॉ. रंगनाथन का चतुर्थ सूत्र प्रत्येंक पाठकों का समय बचाएं, पुस्तकालय की दक्षता, उत्पादकता और प्रबंधन कौशल का महत्वपूर्ण मानक है। यह इस विचार पर आधारित है कि पाठक का समय अत्यंत मूल्यवान है और पुस्तकालय का उद्देश्य उसे व्यर्थ होने से बचाना है। रंगनाथन के अनुसार, जो पुस्तकालय जानकारी देने में अधिक समय लेता है, वह अपनी उपयोगिता खो देता है। पारंपरिक पुस्तकालयों में इस सिद्धांत को लागू करने के लिए वैज्ञानिक वर्गीकरण और सूचीकरण द्वारा पुस्तकों को व्यवस्थित किया जाता है, ताकि उन्हें आसानी से खोजा जा सके। कुशल संदर्भ सेवा के माध्यम से पाठकों को त्वरित सहायता दी जाती प्रदान किया जाता है, औंर शेल्फ व्यवस्था में स्पष्ट लेबल और संकेत होते है तथा पुस्तक निर्गमन और वापसी की प्रक्रिया सरल और तेज रखी जाती है। साथ ही, कर्मचारियों के कार्य समय की बचत तथा कार्य दक्षता में वृद्धि भी एक महत्वपूर्ण सहायक विचार के रूप में उभरकर सामने आया। आधुनिक डिजिटल युग में चतुर्थ सूत्र और अधिक प्रभावी है, जहाँ एआई, सर्च इंजन और NLP उपकरण उपयोगकर्ताओं को भीघ्र और सटीक जानकारी प्रदान करता हैं। चौटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट 24/7 उपलब्ध रहकर प्रतीक्षा समय को लगभग समाप्त कर देते हैं, जबकि भविष्यवाणी आधारित विश्लेषण प्रणाली भविष्य की मांग का अनुमान लगाकर संसाधनों की तैयारी में मदद करता है। हालांकि, तीव्रता के साथ सूचना की सटीकता और विश्वसनीयता बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है।

पंचम सूत्रः पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है

डॉ. रंगनाथन का पंचम सूत्र पुस्तकालय एक विकासशील जीव है पुस्तकालय की प्रकृति और निरंतर विकास को दर्शाता है। उन्होंने पुस्तकालय की तुलना एक जीवित प्राणी से की, जिसमें समय के साथ दो प्रकार का विकास होता है, एक भौतिक विस्तार, जैसे :– संग्रह, पाठकों, कर्मचारियों और भवन का बढ़ना, और दूसरा गुणात्मक विकास, जिसमें सेवाओं की गुणवत्ता और उपयोगिता में सुधार किया जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार पुस्तकालय भवन का निर्माण भविष्य के विस्तार को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। साथ ही वीडिंग आउट यानी पुरानी, अप्रचलित और अनुपयोगी पुस्तकों को हटाना भी आवश्यक है, ताकि नई और प्रासंगिक सामग्री के लिए स्थान बन सके। इस डिजिटल समय में विकास का अर्थ केवल भौतिक विस्तार नहीं, बल्कि सर्वर क्षमता, क्लाउड स्टोरेज और ई–संसाधनों की वृद्धि भाामिल है, जिससे एक छोटा पुस्तकालय भी विशाल डिजिटल संग्रह उपलब्ध करा सकता है। आधुनिक संदर्भ में यह सूत्र सेल्फ–इवॉल्विंग एल्गोरिदम और बिग डेटा से जुड़ गया है, जहाँ पुस्तकालय केवल सूचना का संग्रह नहीं बल्कि उसका सृजनकर्ता बन गया है। एआई आधारित "स्मार्ट वीडिंग" और डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से यह तय किया जा सकता है कि कौन–सी सामग्री अब प्रासंगिक नहीं है। यह सूत्र यह भी संकेत देता है कि यदि पुस्तकालय समय के अनुसार खुद को नहीं बदलते, तो वे अप्रासंगिक हो सकते हैं, इसलिए निरंतर नवाचार और अनुकूलन आवश्यक है।

वैकल्पिक सूत्र और आधुनिक विस्तारः एक समीक्षात्मक अध्ययन

माइकल गोर्मन के नए सूत्र (1995)

माइकल गोर्मन ने रंगनाथन के सिद्धांतों को भविष्य की प्रौद्योगिकियों के संदर्भ में पुनर्गठित किया:

1. Libraries serve humanity.
2. Respect all forms by which knowledge is communicated.
3. Use technology intelligently to enhance service.
4. Protect free access to knowledge.
5. Honor the past and create the future.

गोर्मन की समीक्षात्मक अध्ययन यह है कि "ओवर–इनोवेशन" कभी–कभी पाठकों को भ्रमित कर सकता है या पुस्तकालय के मूल मानवीय मूल्यों को कमजोर कर सकता है।

अलीरेजा नोरुजी के वेब के पांच सूत्र (2004)

2004 में, लाइब्रेरियन अलीरेजा नोरूजी ने अपने शोध–पत्र "वेब पर रंगनाथन के नियमों का अनुप्रयोग" में वेब पर रंगनाथन के नियमों को लागू करने की अनुशंसा की:

1. Web resources are for use.
2. Every user has his or her web resource.
3. Every web resource its user.
4 Save the time of the user.
5. The Web is a growing organism.

नोरुजी के अनुसार, वेब और पुस्तकालयों के बीच का अंतर कम होता जा रहा है, और वेब को एक विशाल डिजिटल पुस्तकालय के रूप में प्रबंधित किया जाना चाहिए।

2008 में, लाइब्रेरियन कैरल सिम्पसन ने सुझाव दिया कि मीडिया की समृद्धि को देखते हुए रंगनाथन के नियमों में संशोधन किया जाना चाहिए। वे संशोधन निम्नलिखित थे:

1. Media are for use.
2. Every patron his information.
3. Every medium its user.
4. Save the time of the patron.
5. The library is a growing organism.

रंगनाथन के सिद्धांतों की महानता इसी बात में है कि उन्होंने कई नए विचारकों को प्रेरित किया जिन्होंने इन सूत्रों को आधुनिक समय के अनुसार संशोधित या विस्तारित किया गया। किसी भी चींज को व्यवस्थित करने के लिए और उसका विकास करने के लिए एक नि चत कार्य प्रणाली की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार, पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सिद्धांत इस क्षेत्र में आधारशिला के रूप में स्थापित हुए हैं। अनेक विद्वानों ने डॉ. एस. आर. रंगनाथन के पाँच नियमों को समय की आवश्यकताओं एवं आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के अनुरूप पुनःपरिभाषित एवं विकसित किया है, जिसे ये सिद्धांत आज के डिजिटल एवं ज्ञान–आधारित युग में भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रभावशाली बनें हुए है।

आधुनिक समय में नैतिक चुनौतियाँ और नविन ज्ञान

रंगनाथन के सूत्रों को अधुनिकता के माध्यम से लागू करने में कई नैतिक और कानूनी चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं, जिनका समाधान नविन ज्ञान का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।

1. आँकड़ा गोंपनीयता एवं वैयक्तिकरण

‘‘प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक’’ (द्वितीय सूत्र) प्रदान करने के लिए एआई को उपयोगकर्ता के व्यक्तिगत डेटा तक पहुँच की आवश्यकता होती है। यहाँ गोपनीयता और सेवा के बीच एक संघर्ष उत्पन्न होता है। पुस्तकालयों को डेंटा न्यूनीकरण और अनामीकरण जैसी तकनीकों का उपयोग करना चाहिए, ताकि वे पाठक की पहचान उजागर कियें बिना सेवाएं दे सकें।

2. एल्गोरिथम पारदर्शिता और उत्तरदायित्व

चतुर्थ सूत्र (पाठकों का समय बचाएं) के लिए उपयोंग किए जाने वाले एआई सिस्टम अक्सर ‘‘ब्लैक बॉक्स’’ की तरह कार्य करते हैं। पुस्तकालयों का नैतिक दायित्व है कि वे ऐसी प्रणालियाँ चुनें जो पारदर्शी और जवाबदेह होने चाहिए।

3. डिज़िटल डिवाइड और पहुँच में समांनता

यदि एआई–आधारित सेवाएं केवल महंगी सदस्यता या उच्च गति के इंटरनेट वाले पाठकों तक सीमित हैं, तो यह द्वितीय सूत्र का उल्लंघन है। नविन ज्ञान का प्रसार यह मांग करती है, कि नया तकनीक ‘‘सूचना के लोकतंत्रीकरण’’ का साधन बने, न कि उसे कुछ वर्गों तक सीमित करना है।

नविन ज्ञान के तहत कार्यान्वयन के लिए कार्ययोजना

आधुनिक पुस्तकालयों को रंगनाथन के सूत्रों को जीवित रखने के लिए केवल आधुनिक तकनीक अपनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक व्यवस्थित कार्ययोजना की आवश्यकता है।

- **व्यावसायिक क्षमता का विकास:** पुस्तकालयाध्यक्षों को डेटा एनालिटिक्स, एनएलपी (NLP) और एआई साक्षरता में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

- **उपयोगकर्ता–केंद्रित डिजाइन:** सभी डिजिटल प्लेटफॉर्म 'यूनिवर्सल डिजाइन' के सिद्धांतों पर आधारित होने चाहिए ताकि वे दिव्यांगों और विभिन्न भाषाई समूहों के लिए सुलभ हों।
- **आधुनिक नीतियाँ:** प्रत्येक पुस्तकालय के पास एआई के उपयोग के संबंध में स्पष्ट नीति होनी चाहिए, जो उपयोगकर्ता की सहमति और डेटा सुरक्षा को प्राथमिकता दे।
- **सहयोगात्मक नेंटवर्क:** पुस्तकालयों को एक–दूसरे के साथ डेटा और संसाधनों को साझा करने के लिए एआई–संचालित नेंटवर्क (जैसे – वैश्विक कैटलॉग) का हिस्सा बनना चाहिए।
- **निरंतर नवाचार:** पंचम सूत्र के अनुसार, पुस्तकालयों को नई तकनीकों (जैसे – ब्लॉकचेन) के प्रयोग के लिए तैयार रहना चाहिए, बशर्ते वे सेवा में सुधार करें।

निष्कर्ष

डॉ. एस.आर. रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्र सूचना प्रबंधन के क्षेत्र में ध्रुव तारे के समान दिखाई पड़ता, है जो बदलती प्रौद्योगिकियों के बावजूद पुस्तकालयों को राह दिखाने का कार्य करते रहे हैं। "पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्रों का समीक्षात्मक अध्ययन : एक समकालीन परिप्रेक्ष्य यह स्पष्ट करता है कि ये सूत्र अपनी मूल आत्मा में आज भी उतने ही प्रभावी हैं, जितने 1931 में थे। "पुस्तकें उपयोग के लिए हैं" अब "सूचना और एआई उपयोग के लिए है" में बदल गया है। "प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिलें" अब "प्रत्येक उपयोगकर्ता को उसका वैयक्तिकृत ज्ञान औंर अनुभव मिलें" बन गया है। एआई और डिजिटल प्रौद्योगिकियां रंगनाथन के सपनों को साकार करने के शक्तिशाली उपकरण हैं, बशर्ते उनका उपयोग नैतिक और मानवीय दृष्टिकोण के साथ किया जाए।

भविष्य का पुस्तकालय केवल ज्ञान के संग्रहण का केंद्र नहीं होगा, बल्कि वह एक ऐसा गतिशील ज्ञान–संस्थान होगा जहाँ ज्ञान का सृजन, प्रसार एवं उपयोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा मानवीय संवेदनाओं के संतुलन के साथ संपन्न होगा। डॉ. रंगनाथन का पाँचवाँ सिद्धांत हमें यह संदेश देता है कि पुस्तकालय कभी स्थिर नहीं रह सकता, उसे समय, तकनीक और उपयोगकर्ताओं की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकसित होना आवश्यक है। अतः "आधुनिक दृष्टिकोण" का वास्तविक अर्थ है— उन्नत तकनीकों को अपनाना, उपयोगकर्ता–केंद्रित सेवाओं को प्राथमिकता देना तथा मानव मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए सूचना आवश्यकताओं की समयानुकूल पूर्ति करना है।

संदर्भ :

1. Igboechesi, Gilbert Paul. (2025). Five Laws of Library Science in the Context of Modern Academic Libraries: Its Relevance. International Journal of Library and Information Science Studies. Vol.11, (2), 1-10. doi: https://doi.org/10.37745/ijliss.15/vol11n2110
2. Dangar, Dharmishtha M. & Kanadiya, P. (2025, September). Reimagining Dr. S.R. Ranganathan's Five Laws of Library Science with Artificial Intelligence for library circulation. *College Libraries*, *40*(3), 76-81.

3. Dhiman, A. K. (2023). Variants of Ranganathan's Five Laws: An Analytical Study. *International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 11*(11), 8–15. doi: 10.29121/granthaalayah.v11.i11.2023.5339
4. Shahjit, S., Mirche, L., & Sharma, N. . (2024). THE IMPORTANCE OF BRANDING AND POSITIONING IN MARKETING LIBRARY SERVICES: A PROFESSIONAL ANALYSIS. *AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE*, *5*(11), 51–56. Retrieved from https://agpegondwanajournal.co.in/index.php/agpe/article/view/387
5. Martínez-Ávila, Daniel. (2024). Annals of Library and Information Studies.Vol. 71, 92- 104 DOI: 10.56042/alis.v71i1.8992
6. Ranganathan, S. R. (1931). *The Five Laws of Library Science*. Madras library association. Publication series; London: Edward Goldston, Ltd. pp. 1, 75, 299, 337, 382.
7. Chhetri, P. (2023). Rethinking Ranganathan's Five Laws of Library Science in the Artificial Intelligence Era. LIS Links Newsletter, 9(1), 10-16. http://newsletter.lislinks.com
8. https://www.librarianshipstudies.com/2017/09/five-laws-of-library-science.html

■ ■ ■